धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

दिसम्बर 2008

देवात्मा अंक

आना महोत्सव पर आना

गुरु का जन्म महोत्सव आकर मानते जाना,
सत्गुरु की याद को न दिल से भुलाते जाना। 1
खुशियों से भर के आना, श्रद्धा से भर के आना,
श्रद्धा के फूल गुरु के दर पर चढ़ाते जाना। 2
संबंधियों को अपने मित्रों को साथ लाना,
हृदय की तह से गुरु की जय जय बुलाते जाना। 3
दुरोदराज़ होवे बेशक स्थान कितना,
अवसर महान ये न हरगिज़ गंवाते जाना। 4
गुरु सेवकों के दर्शन पाओगे आ यहां पर,
कुछ उनकी सुनते जाना, अपनी सुनाते जाना। 5
सच्चे धर्म के बानी कोई न जिनका सानी,
महिमा को उनकी सुनकर हृदय झुकाते जाना। 6
उनसे जो दान पाया पलटी हमारी काया,
औरों को वो बताकर उनको बचाते जाना। 7
औरों के हित की खातिर जो त्याग सत्गुरु के,
सुनकर वो दुख सदमे आंसु बहाते जाना। 8
गुरु ने हमारी खातिर वारी है जान अपनी,
कुछ भेंट दे के तुम भी अपनत्व घटाते जाना। 9
मायूस कर न देना उपकारियों को अपने,
संग्राम उनके अनथक निष्फल न यूं बनाना। 10
कल आने वाली नसलें हैरान हों न हम पर,
सौभाग्य की न अपने कीमत घटाते जाना। 11
आना महोत्सव पर, आना जरूर आना।

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 12

दिसम्बर 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्री देवगुरु भगवान के व्याख्यान का सारांश कि जो उन्होंने अपने 59वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर दिया था।

शरीर के विचार से मैं एक रोगी आदमी हूँ। और कारणों के सिवाय बोलने का जिस अंग (गले) से सम्बन्ध है, वह मेरा अंग भी बहुत वर्षों से बिगड़ा हुआ है। कई और तकलीफें इसके अतिरिक्त हैं। परन्तु रोगी होकर भी मुझसे यह सहन नहीं हो सकता कि इस विशेष दिन के अवसर पर जोकि साल भर के बाद आता है, मैं तुम सबसे न मिलूं और तुम्हारे लिए कुछ भी सेवाकारी न बनूं। पिछले साल मैं इस अवसर पर तकरीर करने से कई महीने तक बीमार रहा। गला इतना पक गया कि जितना पहले कभी न पका था। खाना-पीना मुश्किल हो गया। खांसी जारी हो गई। बहुत दवा की और जलवायु के परिवर्तन के लिए कई स्थानों में गया, परन्तु लाभ न हुआ। आखिरकार पहाड़ पर जाकर आराम हुआ। संभव है कि इस उपदेश से मेरी सेहत को हानि पहुंचे, परन्तु मेरा सारा जीवन त्याग और संग्राम का जीवन रहा है। मैंने अपने जीवन व्रत के सम्बन्ध में किसी कर्त्तव्य के पूरा करने में किसी सुख या आराम के त्याग करने और मुसीबत या बीमारी आदि को अपने ऊपर लेने से गरेज नहीं किया। ऐसा करना मेरे देव जीवन के विरुद्ध था, ऐसे त्याग और दुःख ग्रहण के बिना कामयाबी असंभव थी। इसलिए यदि आज के परिश्रम से मुझे किसी प्रकार की हानि पहुंचे तो मैं उसके ग्रहण करने के लिए तैयार हूं और इससे बेपरवाह होकर अब अपने व्याख्यान को आरंभ करता हूँ।

आजकल के कई वैज्ञानिक जनों के हिसाब के अनुसार इस पृथ्वी में जब से मनुष्य प्रगट हुआ है तब से लगभग 60 हजार वर्ष गुजर चुके हैं। 60 हजार वर्ष का जमाना कितना बड़ा जमाना है। पहले एक दिन के समय को, फिर एक हफ्ता, फिर एक महीना और एक साल के समय को सामने लाओ और फिर सोचो की 60 हजार साल का जमाना कितना बड़ा जमाना है। इस पृथ्वी पर जहां-जहां मनुष्य जाहिर हुआ है, वहां-वहां वह अपनी गठन के विचार से बिल्कुल एक ही प्रकार का ज़ाहिर नहीं हुआ। कहीं उसने बेहतर गठन पाई और कहीं बदतर। किसी श्रेणी की गठन बेहतर थी और उसमें बेहतर तबदीली लाने वाले चारों ओर के सामान भी अनुकूल थे और किसी

के इसके विरुद्ध। इसलिए जहां तबदीली के अटल नियम के अनुसार कुछ श्रेणियों की अवस्था में धीरे-धीरे बहुत बड़ी बेहतरी आई और वह बहुत सभ्य बन गई, वहां कुछ की अवस्था में बहुत थोड़ा फर्क आया और वह इतने लम्बे समय के बाद भी अब तक हैवान से कुछ बराय नाम दर्जा ऊपर हैं। अफ्रीका के कुछ भागों में अब तक इस दर्जे के आदमी वर्तमान हैं, जिन्हें पूरा वहशी कह सकते हैं और जो लगभग हर अंग के विचार से पशु की तरह जिन्दगी बसर करते हैं। वह पशुओं की तरह बिल्कुल नंगे रहते हैं और किसी अंग के बेपरद रहने में कोई लज्जा मालूम नहीं करते। उनमें से कुछ दर्जा ऊपर एक और श्रेणी है कि जिनमें लज्जा शक्ति का कुछ भाव पैदा हो गया है और इसलिए वह जंगली होकर भी अपने विशेष-विशेष गुप्त अंगों को छिपाकर रखने के आकांशी बन गए हैं और वह इसलिए वृक्षों के पत्तों आदि से अपने उन अंगों को ढक छोड़ते हैं। अण्डमान टापू और सीलोन अर्थात लंका में इस श्रेणी के आदमी मौजूद हैं कि जो यू नंगे रहते हैं, पशुओं को मारकर या फलों के द्वारा अपना भोजन प्राप्त करते हैं, खोह में रहते हैं परन्तु अपने गुप्त अंगों को पत्तों या छाल से ढक लेते हैं। उनमें थोड़ी सी अकल की भी उन्नति हुई है। यदि वह देखते हैं कि वृक्ष फलों से लदा हुआ है। परन्तु उनके फलों तक उनका हाथ नहीं पहुँचता तो वह इतना सोचने के योग्य बन गए हैं, कोई लम्बी लकड़ी लेकर उसका सिरा वहां तक पहुँचाकर उसके द्वारा फल तोड़कर जमीन पर गिरा लें। इस प्रकार कुछ और आरम्भिक अक्ल की कुछ-कुछ बातें उनमें विकसित हो गई हैं। आंतरिक योग्यता और बाहरके सामानों से ही जिन्हें अंग्रेजी में हैरीडिटी और इन्वायररेनमैंट कहते हैं, इन्सानी जिन्दगी में कई प्रकार की तबदीली आई है। तबदीली के इसी साधारण नियम के अनुसार अब सर्दी के दिनों में कितने ही वृक्षों के पत्ते गिर रहे हैं और कितने वृक्षों के पत्ते हरे भरे हैं और उनमें खूब फूल खिल रहे हैं। कई वृक्ष सूख रहे हैं और कई लहलहा रहे हैं। एक ओर अन्दर की योग्यता और दूसरी ओर जिन सामानों से एक-एक अस्तित्व घिरा हुआ है, उनसे जुड़ने पर परिवर्तन पैदा होता है। यह परिवर्तन अनिवार्य है। इन्हीं दोनों चीजों से मां के अन्दर धीरे-धीरे बच्चे का वजूद बनता है और फिर उसके पैदा हो जाने पर बाहर की दुनिया के सम्बन्धों के असर से उसमें और तबदीली आती है। इस तबदीली के लाने में किसी कल्पित देवी देवते या परमेश्वर या खुदा या गॉड का कोई दखल नहीं। मुर्गी अपने अण्डे पर बैठकर उसमें तबदीली पैदा करती है। यदि मुर्गी की तरह हम किसी और विधि से अण्डे पर उतने ही दर्जे की गर्मी पहुँचाएं, तो भी उनमें बच्चा बन जाएगा। इन दिनों इसी लाहौर शहर में जो उद्योग की बहुत बड़ी प्रर्दशनी हो रही है, उसमें यंत्र के द्वारा अण्डों तक गर्मी पहुंचाकर बच्चे पैदा करके दिखाए जा रहे हैं। यदि कहो कोई ईश्वर नामी पुरुष उसे बनाता है तो हम चैलेंज करते हैं कि तुम उसे कहो कि वह बच्चे को पैदा न होने दे, परन्तु उसकी कुछ पेश न जाएगी और बच्चा जरूर पैदा होगा। हम गुलाब की एक कलम जमीन पर लगा देते हैं, उसे आवश्यक पानी, वायु और प्रकाश देना आरम्भ करते हैं, तुम किसी कल्पित देवी देवते या परमेश्वर या खुदा से कहो कि वह उससे पत्ते न निकालने दे, हरा भरा न होने दे परन्तु हम उसे हराभरा करके उसमें फूल पैदा करके दिखा देंगे। बात यह है कि जो अस्तित्व है ही नहीं, वह अपना कोई कार्य भी नहीं दिखा सकता। नेचर या विश्व है और वह दो चीजों अर्थात जड़ और शक्ति को

लेकर सदा से है और यह दोनों चीजें एक दूसरे पर कार्य करके इसमें हमेशा परिवर्तन पैदा करती रहती हैं और इस परिवर्तन से उसमें कई प्रकार के अस्तित्व प्रकाश और लोप होते रहते हैं। परिवर्तन का यह नियम सदा से है और अटल है। इसी परिवर्तन के द्वारा जैसे नेचर में मनुष्य का प्रकाश हुआ है, वैसे ही हजारों वर्षों में उसकी मानसिक शक्तियों में धीरे-धीरे बेहतर तबदीली आई है। अब भी पृथ्वी के कई स्थानों में ऐसे लोग रहते हैं जो कि जो पूर्णत: जंगली पशुओं की तरह जीवन व्यतीत करते हैं। वह न खेती करते हैं और न पशु पालते हैं और न घर बनाते हैं, न कपड़ा पहनते हैं न उनमें किसी विद्या की उन्नति हुई है और न हुनर की और न किसी प्रकार की सभ्यता की। क्योंकि वह ऐसे हालात में रहे हैं कि जहां उनकी मानसिक शक्तियां विकसित नहीं हो सकती थी। या उनमें विकसित होने की योग्यता ही न थी परन्तु और कितने ही स्थानों में जहां तक कि आदमियों में उनकी मानसिक शक्तियां विकसित हो सकती थी और उनके विकसित होने के अनुकूल हालात नेचर में वर्तमान थे, वहां उनमें धीरे-धीरे बहुत आश्चर्य जनक उन्नति हुई है जैसा कि हम यूरोप और अमेरिका के लोगों में देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे देश में भी एक काल तक इस प्रकार की उन्नति का सिलसिला जारी रहा था परन्तु फिर बीच में विघ्न आ गया और वह सिलसिला बहुत कुछ टूट गया।

मनुष्य की मानसिक उन्नति के सिलसिले में पहले पहल कल्पना शक्ति का विकास हुआ है। हजारों वर्षों तक उसमें इस कल्पना शक्ति का बहुत बड़ा ज़ोर रहा और अब तक भी साधारण लोगों के दिमागों में उसका बहुत बड़ा अधिकार वर्तमान है। मनुष्यों में असंख्य प्रकार की जो-जो मिथ्या गप्पें कई मुल्कों में पाई जाती हैं, उनको पैदा करने वाली यही कल्पना शक्ति है। नाना प्रकार की हजारों महा झूठी कहानियों की मां यही कही जा सकती है। किसी बात को कहकर किसी को आश्चर्य में डालने या उसमें आश्चर्य भाव के उकसाने के लिए इसी शक्ति से काम लिया गया है। नेचर के अटल नियमों के विरुद्ध तरह-तरह कि करामातों, क्रिश्मों और सैकड़ों प्रकार की मज़हबी झूठी गप्पों की पैदाइश में इसी शक्ति का हाथ रहा है, इसलिए छोटे-छोटे बच्चे जिनमें विचार की शक्ति बराय नाम होती है स्वभावत: कहानियों को बहुत पसंद करते हैं। चिड़े-चिड़ी की कहानी भी सुनकर लाखों बच्चे न केवल प्रसन्न होते हैं बल्कि उसे बार-बार सुनना चाहते हैं। अलफ लैला की कहानियों को कई देशों के लोग अब भी बहुत शौक से पढ़ते हैं।

कल्पना शक्ति के ऊपर विचार शक्ति है। इस शक्ति की उन्नति का सिलसिला उस समय तक संतोष जनक नहीं चल सकता, जब तक मनुष्य अपने विचारों को लिखने की योग्यता प्राप्त नहीं करता। लिखने के हुनर के निकल आने पर जब एक नस्ल के सोचने वालों के विचार लिखित में बंद रहकर अगली नस्लों तक पहुंचने लगते हैं तब विचारों की उन्नति का अच्छा सिलसिला चलता है। परन्तु यद्यपि मानव बुद्धि की उन्नति ने सोच और विचार में एक जमाने तक अच्छी उन्नति की परन्तु इस सोचने वालों के इस विचार का सिलसिला गणित और ज्योतिष विद्या आदि कुछ विद्याओं को छोड़कर जिनमें गणित का होना आवश्यक था, और अंगों में बिल्कुल अटकलपच्चु रहा और इसलिए एक जमाने तक सृष्टि की उत्पत्ति आदि के सम्बन्ध में जितनी विचारों की घुड़दौड़ रही, या तो वह बिल्कुल कल्पित रही या

अनुमानक। इसलिए सृष्टि की उत्पत्ति और उसमें विविध प्रकार की जो घटनाएं पैदा होती रहती हैं, उनके पैदा होने आदि के बारे में कई देशों में जिस कदर कहलाने वाली फिलॉस्फियां घढ़ी गई, वह सब ही इसी प्रकार की हैं।

इसके पश्चात मनुष्य की बुद्धि की उन्नति में जब से उस युग का प्रकाश हुआ कि जब कुछ विचारशील लोगों पर यह भेद खुला कि उन्हें नेचर के बारे में जो बात जाननी हो, उसका प्रश्न उसी से करना चाहिए और उसका उत्तर भी उसी से प्राप्त करना चाहिए और अपनी कल्पना के द्वारा स्वयं कोई उत्तर न घढ़ लेना चाहिए। तभी कोई सही और ठीक-ठीक ज्ञान मिल सकता है, वरना केवल अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा इसी प्रश्न का स्वयं कुछ जवाब घढ़ लेने से सच्चा और सही ज्ञान नहीं मिल सकता, तब से नेचर की खोज का रुख बिल्कुल बदल गया और तब से ऐसे लोगों को ज्ञान की उन्नति की सच्ची राह भी मिल गई और उन्हें अपनी अज्ञानता से निकलने और आगे के लिए बचने के लिए अवसर भी मिल गया। ओह, हजारों वर्ष के भयानक अंधेरे में पड़े रहने और भटकते फिरने के पश्चात कुछ लोगों का आखिरकार इस ठिकाने पर पहुंचना कितना हर्षदायक और विश्व में विकास के सिलसिले की कितनी महान विजय!

नेचर के किसी तत्व को नेचर से ही सीखने का मतलब यह है कि किसी ऐसे तथ्यों के बारे में तुम अपनी कोई कल्पना न करो। तुम स्वयं अपनी ओर से कोई बात न घड़ो बल्कि उसकी ओर ही देखो और लगातार अवलोकन और परीक्षा के द्वारा जो घटनाएं मिलें, उन्हीं को जानो और ऐसी घटनाओं को लेकर ठीक तर्क के सिद्धांतों से नतीजे निकालो और इस सारे अमल से जो फल निकले, उसे अपने पहले विश्वासों के विरुद्ध पाकर भी ग्रहण करने के लिए तैयार रहो, तब ही तुम सच्चाई की राह पर चलकर सत्य को प्राप्त कर सकते हो। नेचर के किसी विभाग में इस प्रकार की खोज का नाम ही वैज्ञानिक खोज है, परन्तु इस प्रकार की खोज के नियमों को ग्रहण करने के लिए केवल गिनती के आदमी योग्यता रखते हैं। इसलिए सभ्य देशों में भी केवल गिनती के ही आदमी इस प्रकार की ज्ञान विषयक खोज में व्यस्त पाए जाते हैं और उनमें से भी कितने लोग विद्वान कहलाकर भी अपनी एक या दूसरे थ्योरी के स्थापन करने में हठधर्मी और तास्सुब से परिचालित होकर जानबूझ कर या अनजाने मिथ्या का साथ देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं और जो सच्चाई को ही ढूंढने के लिए कोशिश करते हैं, वह भी धर्म विषयक तत्व ज्ञान के लिए आकर्षण नहीं रखते, क्योंकि उसके लिए जीवन के हर अंग में सच्चाई और भलाई के लिए वफादार रहने के लिए जिन कई उच्च अनुरागों की आवश्यकता है, वह उनमें वर्तमान नहीं और वह एक या दूसरी ज्ञान विषयक खोज में व्यस्त होकर भी केवल यही नहीं कि अपनी अध्यात्मिकता के विचार से कोई उच्च जीवन नहीं रखते, बल्कि कितनी ही अवस्थाओं में बहुत एतराज के काबिल और बहुत शोकप्रद जीवन व्यतीत करते हैं। कितने ही जन विद्वान होकर भी अपने पहले मज़हबी विश्वासों की चाहे वह कैसे ही झूठ क्यों न हों, विज्ञान की बिना पर जांच पड़ताल करना भी उचित नहीं समझते। उनके विचार में जो कुछ उनके विश्वास की चीज है, उसमें विज्ञान का कुछ दखल न होना चाहिए, चाहे उनके विश्वास विज्ञान के खोजे हुए सच्चे नियमों के कितनी ही विरुद्ध हों।

दुनिया के सारे मनुष्यों की अवस्था पर निगाह

डालने से साफ मालूम हो सकता है कि उनमें अभी तक अपने जीवन के विषय में सच्चे ज्ञान के लिए कोई आकांक्षा नहीं जागी। एक या दूसरे प्रकार के भले काम करने वाले मनुष्य निश्चय पाए जाते हैं, परन्तु आत्मिक जीवन के बारे में सच्च को ढूंढने और ग्रहण करने के लिए लोग तैयार नहीं। उनमें या तो कुछ ऐसे जन हैं कि जो अपने पुराने विश्वासों को विज्ञान के विरुद्ध पाकर बिल्कुल छोड़ चुके हैं और उनकी जगह नई रोशनी और नए सत्य कुछ नहीं पा सके, या ऐसे लोग हैं कि जो पहले ही झूठे विश्वासों के महा हानिकारक अंधेरे में ही पड़े हुए हैं। दोनों ही अवस्थाएं किस कदर शोचनीय।

परन्तु इन कुछ विद्वान लोगों के सिवाय दुनिया के साधारण लोगों की तो और भी बहुत शोचनीय अवस्था है। इधर आत्मा और उसके जीवन के विषय में उनमें पूर्ण अज्ञानता छाई हुई है और वह सत्य धर्म के ज्ञान से पूर्णत: खाली हैं, उधर वह कल्पित और मिथ्या मतों के विविध प्रकार के कुसंस्कारों में इस कदर जकड़े हुए हैं और एक या दूसरी मज़हबी सोसायटी की रस्सी से इस कदर सख़्त बंधे हुए हैं और मिथ्या या झूठ के जीवन के इस कदर दास हो चुके हैं कि उन्हें अपने जीवन के बनने और बिगड़ने के बारे में सत्य ज्ञान के प्राप्त करने की कोई आवश्यकता मालूम नहीं होती। वह मिथ्या में रहकर केवल यही नहीं कि किसी प्रकार की ग्लानि या तकलीफ अनुभव नहीं करते बल्कि उसे अपने लिए बहुत आकर्षणीय और हलवे से भी ज्यादा मीठा और स्वादिष्ट पाते हैं और जैसे छोटे-छोटे बच्चों को झूठी कहानियां बहुत आकर्षणीय मालूम होती हैं, वैसे ही इन लोगों को चाहे वह बौद्ध हों या जैनी, इसाई हों या मसाई, ब्रह्मो हों या आर्या, मुस्लमान हों या पारसी, सनातनी हों या अहमदी विविध प्रकार के झूठे और बिल्कुल मनगढ़त मज़हबी विश्व बहुत प्यारे और आकर्षणीय मालूम होते हैं। इसलिए मनुष्य जीवन के सम्बन्ध में निहायत गहरे अंधकार के वर्तमान होने से धर्ममत, पाप, पुण्य, पाप और पुण्य के फलों, मोक्ष, साधन, उपास्य, पूजा, परलोक, त्याग और मुख्य लक्ष्य आदि के बारे में इस पृथ्वी के विविध मज़हबी सम्प्रदायों में जिस कदर झूठी और मनगढ़त शिक्षा परिचलित है और उससे न केवल मनुष्यों बल्कि पशुओं और अन्य और अस्तित्वों को जिस कदर हानि पहुँची है और अब तक पहुंच रही है, उसका ब्यान नहीं हो सकता।

परन्तु मनुष्य जगत केवल झूठे मतों और विश्वासों का ही शिकार नहीं हो रहा था, बल्कि मनुष्य अपनी वासना, उत्तेजना और अहं की नाना शक्तियों के वशीभूत होकर जिस जिस प्रकार की नीच गतियां ग्रहण करता है और अपनी इन बुरी गतियों से क्या अपने साथियों और क्या अपने से नीचे किसी जीवित और अजीवित अस्तित्वों के लिए जिस कदर हानिकारक बनता है, उसके पाप कर्मों से भी नालां था। कल्पित ईश्वर या खुदा के नाम से कई प्रकार के भयानक गुनाहों और जुर्मों की शिक्षा तो पुराने जमाने से ही वर्तमान थी और इस प्रकार की बुरी शिक्षा के अनुसार मनुष्यों की हकतलफी के अतिरिक्त लाखों मासूम पशुओं की गर्दनें भी कट रही थी परन्तु इस जमाने में भी उसी ईश्वर की आज्ञा बताकर अपने से गैर मज़हब रखने वाले जनों को जलावतन करना और मांस के लिए पशुओं को वध करना और नियोग सम्बन्धी व्यभिचार करना आदि कितने ही पाप कर्मों को उचित ठहराया गया है। कुछ दिन हुए इसी शहर के एक बी. ए. बैरिस्टर ने जो एक मज़हबी सोसायटी का लीडर है, कितने ही माननीय जनों के सामने यह जाहिर

किया कि वह अपनी मजहबी सोसायटी की रक्षा के लिए न केवल झूठ बोलना बल्कि चोरी तक भी करना उचित समझता है। एक ओर वह कानून के अनुसार चोरी को जुर्म बताने के लिए भी तैयार है और दूसरी ओर वह अपनी धर्म की सोसायटी की रक्षा के लिए उसकी आवश्यकता का भी उपदेश करता है। ओह, सत्यधर्म की ओर से अंधकार में रहकर मनुष्य विद्वान होकर भी किस कदर गुमराह हो रहा है। परन्तु क्या एक और शिक्षित एम. ए. बैरिस्टर ने बेगुनाह लोगों का खून करना उचित नहीं बताया? और क्या बंगाल में इन दिनों जो कितने ही डाके पड़ रहे हैं, उन डाकुओं में कालेजों के शिक्षित और विशविद्यालय के डिग्री प्राप्त न थे? और उन्होंने यह प्रगट नहीं किया कि यह सब डकैतियां उन्होंने देश के लाभ के लिए की हैं? ओह, किस कदर भयानक अवस्था! ईश्वर विश्वास और उच्च शिक्षा के होने पर भी किस कदर गहरा अंधेरा और किस कदर पापों का प्रचार और इस दुनिया की कैसी बुरी अवस्था!

इसलिए क्या मिथ्या विश्वासों और मतों के गहरे और महा हानिकारक अंधकार और क्या सैकड़ों प्रकार के पापों और अपराधों और मोह के महा भयानक दु:खों और कष्टों से परित्राण पाने के लिए यह पृथ्वी बहुत साल से बिलबिला रही थी और उस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी कि जबकि उस पर किसी ऐसे आत्मा का आविर्भाव हो कि जो इन दोनों प्रकार की हालतों को दूर करने के लिए जिन देव शक्तियों की आवश्यकता है, उनसे विभूषित हो। इस पृथ्वी का मनुष्य जगत इस विशेष आविर्भाव के लिए उसी तरह मोहताज था जिस तरह उसके सूखे मैदानों में पड़े हुए घास के बीज अपने फूटने और हरी-हरी घास बनने के लिए वर्षा की प्रतीक्षा करते हैं और पूरे सूर्य ग्रहण के समय अंधकार से घबराकर विविध प्रकार के पक्षी रोशनी की आकांक्षा करते हैं और यद्यपि हजारों वर्षों से यह दुनिया एक ऐसे आविर्भाव की मोहताज थी, परन्तु नेचर के परिवर्तन में हर घटना के प्रगट होने का एक विशेष समय होता है और इस लिए जब वह समय आया कि जिसमें मनुष्य जगत के विकास में एक ऐसा देवात्मा प्रगट हो सके कि जिसकी मनुष्य जगत को सख्त जरूरत थी, तब उसका आविर्भाव हुआ। नेचर का यह कितना महान काम! मनुष्य मात्र के लिए ऐसा आविर्भाव किस कदर सौभाग्य और सम्मान की वस्तु! ऐसा आविर्भाव कैसा अद्वितीय! कैसा महान और किस कदर अमूल्य बरकतों की कान! फिर इस आविर्भाव ने नेचर की गोद में विकसित होने के बाद भरी जवानी में जिस दिन यह कहकर

सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे।
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।।

कुल जगत की सेवा के लिए अपने आप को भेंट किया और इस सेवा के लिए अपना जीवन व्रत ग्रहण किया। वह दिन दुनिया के इतिहास में कैसा अनोखा और कैसा मुबारिक! और ऐसा व्रत कैसा निराला और कैसा अद्वितीय!!

यह व्रत अद्वितीय व्रत क्यों था? इसलिए कि मनुष्य जगत के विकास में देवात्मा में सत्य और शिव विषयक जिन अनुराग शक्तियों और उनके विरुद्ध असत्य और अशुभ विषयक जिन वैराग शक्तियों का प्रकाश हुआ था, उन कुल शक्तियों के विचार से वह स्वयं एक अद्वितीय आविर्भाव था। उसके इस आविर्भाव में आत्मा की गठन ने पूर्णता लाभ की थी और उसमें वह उच्च अंग विकसित हुए कि जिनके विकसित होने से धर्म जीवन की पूर्णता होती है और वह पूरी शक्ल में जाहिर होता है। इस देवात्मा के आविर्भाव से

पहले मनुष्य जगत के कुछ - कुछ सात्विक भावों का अवश्य प्रकाश हुआ था परन्तु सच्चे और पूर्ण देवरुप का प्रकाश नहीं हुआ था। इसलिए दुनिया में वह देव ज्योति भी प्रगट नहीं हुई थी कि जिसमें सच्चे और पूर्ण धर्म का रूप प्रकाशित होता है।

इस अद्वितीय व्रत के ग्रहण करने के बाद यह देवात्मा मनुष्यों के दिलों के बदलने का अद्वितीय काम शुरू करता है। एक ओर वह अपनी विविध अहित विषयक निहायत गहरी घृणा शक्तियों को अपनी वाणी और अपनी लेखनी के द्वारा लोगों के दिलों तक पहुंचाने लगता है और दूसरी और उन पर पवित्र और सेवाकारी जीवन की आवश्यकता और महिमा को प्रगट करके उनमें उसके लिए आकर्षण पैदा करता है। उसकी इस देव शक्ति के कार्य से लोगों के दिल बदलने शुरू होते हैं। उनमें पाप बोध जागृत होता है और वह कई प्रकार के पापों से उद्धार लाभ करते हैं और धर्म जीवन सम्बन्धी उच्च भावों की प्राप्ति के लिए आकांक्षी बनते हैं। कई जन केवल इसी उच्च उद्धेश्य के लिए अपने आप को उसके चरणों में भेंट करते हैं और वह उन्हें इस सर्वोच्च उददे्श्य के लिए ग्रहण करता है। पहले पहल यही लोग उसके शिष्य और सेवक बनते हैं और उसके चरणों में रहकर धर्म विषयक शिक्षा प्राप्त करते हैं।

इधर जग के उपकार का यह काम जारी होता है, उधर देवात्मा सत्य विषयक विविध अनुराग शक्तियों को विकसित करने के लिए उस अद्वितीय तप के साधनों को ग्रहण और पूरे करता है कि जिनके पूर्ण होने पर ही उसके अद्वितीय व्रत की सिद्धि हो सकती थी। इस महा कठिन तप साधन में उसे जिस जिस प्रकार का संग्राम करना पड़ता है, तरह - तरह का अद्वितीय दुख और कष्ट सहना पड़ता है, सोच विचार, ध्यान और अध्ययन में व्यस्त होना पड़ता है, मनुष्य मात्र से पूर्णता निराली और अनोखी चाल ग्रहण करनी पड़ती है और वह अपने अलौकिक आंतरिक बल के द्वारा इस अद्वितीय तप साधन को वर्षों के बाद वर्षों तक पूरा करके अपनी देव ज्योति को लगातार विकसित करने में कामयाब होता है और इस अद्वितीय ज्योति को विकसित करते - करते मनुष्य आत्मा और जीवन के बनने और बिगड़ने के सम्बन्ध में जिस कदर अमूल्य सत्य देखता और प्राप्त करता है और इन सत्यों के प्रकाशित होने के साथ - साथ पहले जमाने के संस्कार प्राप्त कई प्रकार के झूठे विश्वासों को त्याग करता है और पूर्णांग धर्म जीवन को प्राप्त होकर धर्म की असल और अटल बुनियाद और फलॉसिफी मालूम करके उसकी जो शिक्षा देता है, उसका दुष्टांत जैसे एक ओर निहायत आश्चर्यजनक है, वैसे ही दुनियां के मानव इतिहास में विशेष और अद्वितीय है। मुझमें देव जीवन के विकास नामी पुस्तक के पहले खण्ड के पाठ से इस बात की भलीभांत पोषकता हो सकती है।

देव धर्म प्रवर्तक के आत्मा में इस देव ज्योति के विकास ने एक विलक्षण लीला पैदा कर दी। इस ज्योति ने उसके आत्मा को रौशन करके आत्मिक जीवन सम्बन्धी तत्वों को उस पर इस प्रकार प्रगट कर दिया कि जिस प्रकार सैकड़ों चीजों से भरी हुई किसी बड़ी दुकान में रात के समय बिजली की रौशनी होने से उसके अन्दर की सारी चीजें प्रगट हो जाती हैं। परन्तु यह देव ज्योति जो आत्मा के हरेक अंग को ज्योर्तिमान करती है और आत्मिक जीवन के अमूल्य लेकिन छिपे हुए तत्वों को प्रकाश करती है, हर प्रकार की रोशनी से निहायत ऊपर की चीज है। सूर्य के किरणों, लकड़ी या तेल या गैस की ज्वालाओं और

बिजली की चमक से जो रोशनी पैदा होती है, वह शारीरिक चीजों तक ही पहुंचती है। ज्ञान विषयक खोज के द्वारा बुद्धि के विकसित होने से जो रोशनी होने से जो रोशनी पैदा होती है, वह भी किसी आत्मा में उसकी किसी नीच गति या पाप क्रिया को बुरे और घातक रूप में दिखाने की योग्यता नहीं रखती और उससे परित्राण पाने के लिए उसे व्याकुल नहीं करती। इससे ऊपर किसी सात्विक भाव के जागने या उन्नत होने से जो ज्योति पैदा होती है, वह भी वह ज्योति नहीं कि जो आत्मा के विनाश या विकास विषयक तत्वों के प्रगट करने और उन तथ्यों पर नेचर ने सत्य धर्म और धर्म की जो अटल बुनियाद रखी है, उसकी हकीकत को दिखाती हो। इसलिए क्या

(1) सत्य धर्म मत (2) मिथ्या धर्म मत (3) पाप (4) पुण्य (5) पाप और पुण्य कर्मों के फलों (6) मोक्ष (7) धर्म साधनों (8) पूज्य या उपास्य देव (9) पूजा या उपासना (10) परलोक और उसमें जीवन (11) सच्चे त्याग (12) मुख्य लक्ष्य आदि के बारे में देवात्मा ने अपनी उपरोक्त ज्योति में जो तत्व देखे हैं और जिनकी शिक्षा दी है, उनका ज्ञान इस दुनिया में और किसी को नहीं हुआ और इसलिए शिक्षा भी और किसी कहलाने वाले मजहब के किसी संस्थापक ने नहीं दी और मनुष्य मात्र के लिए सत्य और नेचर के अटल नियमों पर स्थापित जिस एक मात्र विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा का अद्वितीय भण्डार देवात्मा ने खोल दिया है, उसे कोई और नहीं खोल सका और उस सर्वोच्च और विशेष देव ज्योति से विहीन होकर कोई खोल भी नहीं सकता था।

तब ऐ श्रोतागणो! इस अद्वितीय देव ज्योति की महिमा को सम्मुख लाओ। उसके द्वारा ज्योर्तिमान होकर देव धर्म प्रवर्तक ने आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में जिस सत्य ज्ञान की शिक्षा दी है और उपरोक्त विषयों पर जो कुछ आज तक मिथ्या शिक्षा दी गई है और अब तक भी दी जा रही है, उसके अंधकार को दूर करके अंधकार वासी आत्माओं को रोशनी में लाने का जो काम आरंभ किया है और गणित विद्या के सच्चे नियमों की तरह आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में मनुष्य जगत जिस सत्य ज्ञान का हजारों वर्षों से मोहताज था, उस पर उस परमवांछनीय ज्ञान का जो खजाना खोल दिया है, उसकी महिमा को देखो और पहचानो और उसके अतिरिक्त हित विषयक जिन विविध अनुरागों और अहित विषयक विविध वैराग शक्तियों में विकसित होकर इसी देव धर्म प्रवर्तक ने मनुष्य मात्र में क्या उनके परस्पर के सम्बन्ध में क्या पशु जगत के सम्बन्ध में क्या उद्भित या भौतिक जगत के सम्बन्ध में विविध प्रकार के पापों और अपराधों का बोध पैदा करने और उनके कारण जो घोर दुःख और कलेश और कष्ट जारी हैं, उससे इस दुनिया में सच्ची मोक्ष देने और उनमें विविध प्रकार के उच्च भाव जागृत और उन्नत करके उनमें सब जगतों के सम्बन्ध में उचित रूप से सेवाकारी बनने के लिए जिस परम वांछनीय परिवर्तन का काम आरंभ किया है, उसकी महिमा को भी उपलब्ध करो और उसने इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जिन नाना यज्ञों और व्रतों के साधनों की विधि दी है और जिस सच्चे उपास्य देव और उसकी सच्ची पूजा की हकीकत बताई है और झूठे और कल्पित उपास्यों और झूठी कल्पित पूजा और झूठी और कल्पित मुक्ति और उसके सम्बन्ध में झूठी कहानियों की जो हकीकत खोली है और झूठे विश्वासों पर स्थापित मज़हबी सम्प्रदायों के लोगों को जिस विज्ञान मूलक सत्य धर्म की अटल बुनियाद पर स्थापित और उसके साधनों की

सत्य प्रणाली का प्रचार करने वाली देव समाज में आने और अपना सर्वोच्च भला करने के लिए जो दरवाजा खोल दिया है, उसकी महानता को देखो और फिर तुम पर प्रगट हो जाएगा कि देव धर्म प्रवर्तक का आविर्भाव नेचर की ओर से कैसा अद्वितीय आविर्भाव है और उसकी ओर से ऐसे आविर्भाव का दान दुनिया के लिए कैसा अद्वितीय वरदान है।

याद रखो कि नेचर की ओर से तुम्हें जो अद्वितीय दान दिया गया है और इस अद्वितीय दान के द्वारा इस दुनिया की सच्ची और प्रबल आवश्यकता और हालात के अनुसार उस में भलाई का जो काम जारी किया गया है, उसके लिए अद्वितीय भेंट की भी आवश्यकता है, रूपये की आवश्यकता है, जमीन की आवश्यकता है, जायदाद की आवश्यकता है, वसीयतों के करने की आवश्यकता है और जो आत्मा अपने आप को अद्वितीय भलाई के काम में भाग लेने की योग्यता और आकांक्षा रखते हों, उन्हें क्या अपने उद्धार और विकास साधन के लिए और क्या देव समाज की सेवा के लिए अपने आपको भेंट करने की भी आवश्यकता है। यह वह पवित्र और सर्वोच्च आवश्यकता है जिससे बढ़कर कोई और आवश्यकता नहीं हो सकती। इस आवश्यकता को पहचान कर तुम जो-जो कुछ अर्पण करो, उससे बढ़कर कोई श्रेष्ठ दान नहीं हो सकता और इस दान से बढ़कर किसी और दान की कोई सफलता भी नहीं हो सकती।

हमारा देश जिस अधोगति की अवस्था में पहुंचा हुआ है और उसके रहने वाले और बातों के अतिरिक्त उच्च आत्मिक जीवन और करेक्टर के सम्बन्ध में रोशनी पाने और रोशनी पाकर और उसके आकांक्षी होकर उसके प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार की सत्य धर्म शिक्षा और सत्य तरबीयत के मोहताज है, उसका पूरा होना यदि किसी तरह सम्भव है तो देव समाज और उसकी उन्नति के द्वारा ही संभव है। इसलिए जो लोग नेचर के इस अद्वितीय दान और उसके अद्वितीय काम और उसके अद्वितीय नतीजों की तस्वीर को कुछ भी देख सकते हों, उनके लिए आवश्यक है कि वह नेचर के इस महान लक्ष्य को पूरा करने के लिए जिस कदर अधिक से अधिक धन, धरती और जायदाद या अपने आपको भेंट कर सकते हों, वह खुशी-खुशी और उत्साह के साथ अर्पण करें और जो लोग वसीयतें लिख सकते हों, वह वसीयतें लिखकर दें।

जबकि कई और सोसाइटियां केवल किसी पुराने कुसंस्कार की दुहाई देकर लाखों रुपए के फंड प्राप्त कर रही हैं, तब क्या यह गहरे शोक और दुःख का विषय न होगा कि देव समाज के लिए क्या उसके अपने आदमी और क्या देश के वह सब आदमी कि जिन तक उसकी हकीकत प्रगट हो, उनसे सैकड़ों गुणा बढ़कर दान न करें और लाखों के फंड न पहुँचावें?

यूरोप और अमेरिका में एक-एक जन आसमान में उड़ने के लिए किसी यंत्र के बनाने के लिए सोच विचार और उसके विषय में एक या दूसरे प्रकार का तजुर्बा करने के लिए आकांक्षी होकर खर्च के लिए अपील करता है और वहां के लोग लाखों रुपए से उसकी मदद करने के लिए तैयार हो जाते हैं, यदि एक जन उत्तर या दक्षिण ध्रुव का पता निकालने के लिए कोई बड़ी स्कीम पेश करता है तो उसके इस काम में सहायक बनने के लिए बहुत से लोग खड़े हो जाते हैं और लाखों रूपए का

फंड इकट्ठा कर देते हैं। हमारे देश में भी स्कूलों और कॉलेजों के लिए लोग अब बड़ी-बड़ी रकमें दान करने लगे हैं परन्तु देव धर्म प्रवर्तक के अद्वितीय मिशन और देव समाज के सर्वोच्च काम की तुलना में यह सब चीजें क्या हकीकत रखती हैं? कुछ भी नहीं। क्या देव धर्म प्रवर्तक के मिशन और देव समाज के हितकर काम से बढ़कर और कोई भी संस्था हितकर होने का दावा कर सकती है? कोई भी नहीं।

ऐ इंडिया के रहने वालो, जहां तुम पिछले कुसंस्कार के अनुसार अपने कल्पित सुख के पीछे जंगल का रास्ता लेते रहे हो और बड़े-बड़े राजपाट और बड़ी-बड़ी जायदादें अपने पीछे छोड़ जाते रहे हो, अपने प्यारे से प्यारे सम्बन्धों को त्याग करते रहे हो, तरह-तरह के शारीरिक कष्ट सिर पर लेते रहे हो, वहां क्या अपने और अपने लाखों देशवासियों के सच्चे हित के लिए उससे भी बढ़कर कुर्बानी करना अपना कर्त्तव्य न समझोगे? क्या जो आविर्भाव सारी दुनिया के सब प्रकार के मंगल के लिए नेचर का अद्वितीय आविर्भाव है और जिसके लिए मनुष्य जगत हजारों वर्ष से मोहताज चला आता था और जो आविर्भाव ऋषियों की भूमि के लिए विशेष रूप से गौरव की वस्तु है, उसके अद्वितीय जीवन व्रत की विशेषता और महिमा के देखने के योग्य न होंगे? निश्चय तुम्हारी योग्यता दिनों-दिन बढ़ेगी जैसा कि पिछले कितने सालों में बढ़ी है और निश्चय इस योग्यता के बढ़ने पर तुम इस अनोखे आविर्भाव और उसके जीवन व्रत की महिमा को अधिक से अधिक देखोगे और उसकी ओर अधिक से अधिक आकर्षित होकर उसको पूरा करने के लिए अधिक से अधिक अपना तन, मन और धन अर्पण करोगे और जिस दिन इस अद्वितीय जीवन व्रतधारी ने जन्म लिया, जिस दिन उसने अपना जीवन व्रत ग्रहण किया और जो दिन भारत के इतिहास में एक ऐसा विशेष दिन है कि जिससे बढ़कर मुबारिक और शुभ दिन कोई और नहीं हो सकता, उसे हर साल अधिक से अधिक सफल करने के लिए संग्राम करोगे और इस आविर्भाव ने जिस सच्चे और पूजनीय देव रूप में विकसित होकर मज़हबी दुनिया के सारे मिथ्या विश्वासों के अंधकार को दूर करके और पापी जनों को पाप जीवन से मोक्ष देकर और उन्हें उच्च जीवन की उच्च शक्तियों में विकसित करके अपने अद्वितीय त्याग और अद्वितीय संग्राम के द्वारा निहायत अलौकिक और निहायत आश्चर्यजनक उच्च फल पैदा किए हैं, उस व्रत के पूरा करने में न केवल औरों का उच्च कल्याण बल्कि अपना भी सबसे बड़ा कल्याण साध न करोगे।

ऐसा हो कि धर्म के पूर्णांग आविर्भाव और सत्य देव का जन्म और व्रत महोत्सव विश्व के प्रत्येक विभाग के लिए दिनों-दिन अधिक से अधिक मंगलकारी हो और तुम्हारे लिए विशेष रूप से मंगल और आनंदकारी हो और देव धर्म के जिस झण्डे के नीचे आकर तुम्हारा विविध प्रकार के पापों और मिथ्या विश्वासों और कुसंस्कारों से उद्धार हुआ है और कई प्रकार से पारिवारिक और सोशल कल्याण हुआ है, उस महान झण्डे के नीचे आकर तुम्हारे और हजारों लाखों मनुष्यों का उद्धार और भला हो।

* * * * * * * * *

श्री देवगुरु भगवान के व्याख्यान का सारांश कि जो उन्होंने अपने 59वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर दिया था।

हे नेचर! तेरे प्रत्येक विभाग के जिन-जिन विभाग ने देवात्मा को प्रगट और उसमें देव जीवन के विकसित करने में सहायता की है, उसे आज के इस विशेष दिन में विशेष रूप से धन्य-धन्य कहता हूँ। तेरे किसी जगत के किसी आस्तित्व ने जहाँ तक मुझ पर किसी प्रकार का उच्च प्रभाव डाला है और मेरे अस्तित्व की रक्षा या उन्नति में कुछ भी भाग लिया हैं, वह धन्य हैं। तेरे मनुष्य जगत में से इस समय मैं अपने पिता माता, दादा-दादी और अपने सतगुरू को विशेष रूप से स्मरण करता हूँ। और उनके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता का प्रकाश करता हूँ। (रो-रो कर) मैं इस समय अपनी उस परलोक वासी धर्म पत्नी को स्मरण करता हूँ कि जिसने इस दुनिया में अपने रहने के दिनों में और क्या परलोक में वास करने के लिए दिनों में विशेषरूप से मेरे जीवन के उच्च पथ में सहाय की हैं, वह धन्य हो और वार-वार धन्य धन्य हो। उसके अतिरिक्त मेरे और जिस किसी सम्बन्धी या किसी जन की किसी शिक्षा और संगत, किसी ग्रंथकर्ता की किसी पुस्तक के पाठ आदि से मेरा किसी प्रकार का भला हुआ हो, ऐसे सब जन भी धन्य-धन्य हों। आज के इस विशेष दिन में मेरे सेवकों में से भी वह सब स्त्री और पुरुष (जीवन तत् 28 फरवरी सन 1910) धन्य-धन्य हों जो मेरे जीवन व्रत पूरा करने में कम व अधिक रूप से सहाय हुए हैं। आज के इस विशेष दिन में तुम सब उस अमुल्य शुभ को सन्मुख लाओ कि जो तुम्हें नेचर के इस विशेष आर्विभाव की विशेष उच्च शक्तियों और उसके विशेष ज्योति के द्वारा प्राप्त हुआ है। इस महा शुभ को सन्मुख लाकर जैसे तुम अपने आपको धन्य-धन्य अनुभव कर सकते हो, वैसे ही मैं स्वयं भी, इस शुभ दिन में तुम सबके लिए विशेष रूप से मंगल कामना करता हूँ। तुम सबका हित हो। तुम सबको उच्च जीवन प्राप्त हो। मैं इस समय तुम सबके कल्याण के लिए भी कामना करता हूँ कि जिन्होंने जान बूझकर या बेसुधि से (फूट-फूटकर) मुझे तरह-तरह की हानि पहुँचाई है, जिन्होंने मुझ पर अत्याचार किया है, मुझे सताया है, मुझे वह आघात पहुंचाये हैं और वह-वह दु:ख और क्लेश दिया है कि जिसकी तुलना नहीं हो सकती। मैं पूर्ण हित अनुरागी होकर प्रत्येक अस्तित्व का ही हित चाहता हूँ, इसलिए तुम सबका भी हित चाहता हूँ। यदि सम्भव हो तो उन्हें भी मेरी जीवन पथदर्शक ज्योति प्राप्त हो और उनके उच्च हित का मार्ग उन पर प्रकाशित हो और विनाशकारी गतियों से उनकी जहां तक रक्षा हो सकती हो, उनकी वहां तक रक्षा हो। आज का यह विशेष शुभ दिन तुम सबके लिए, इस देश और इस पृथ्वी के लिए, विश्व के प्रत्येक जगत के लिए जहां तक और जिस जिस प्रकार से शुभ कर और कल्याण कर हो सकता हो, वहां तक शुभकर और कल्याण कर हो।

प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के परम कल्याण के लिए नेचर ने देवात्मा को आविर्भूत किया है।

(लेखक श्रीमान पी. वी. कनल एम. ए. एल. एल. बी. कर्मचारी देव समाज)

अपने निर्माण के विचित्र कार्य के क्रम में नेचर ने जो मनुष्य श्रेणी का प्रकाश किया है, उसके परम कल्याण के लिए अपने ही इस विचित्र क्रम में नेचर ने भगवान देवात्मा को आविर्भूत किया है। वह किस प्रकार? प्रत्येक मनुष्यात्मा जीवनी शक्ति है। जीवनी शक्ति को छोड़कर किसी मनुष्य का शरीर न बन सकता है, न स्थिर रह सकता है और न उन्नत हो सकता है और न अपने जैसे और शरीर उत्पन्न कर सकता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य के भीतर उस का बहुत कीमती भाग उसका आत्मा या उसकी जीवनी शक्ति है। इस जीवनी शक्ति के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ करना मनुष्य के लिए परम आवश्यक है। मनुष्य यदि सारी दुनिया का ज्ञान प्राप्त कर ले, परन्तु अपनी जीवनी शक्ति के सम्बन्ध में अन्धा और अज्ञानी रहे, तो वह सच्चे अर्थो में ज्ञानी नहीं है। आत्म ज्ञानी ही असल ज्ञानी है, आत्मा के सम्बन्ध में अज्ञानी जन दर असल अज्ञानी और बुद्धू है। यदि कोई मनुष्य सारी दुनिया की युनिवर्सिटियों की डिगरियां प्राप्त कर ले, और अपनी जीवनी शक्ति या आत्मा के सम्बन्ध में अज्ञानी रहे, तो वह मनुष्य बाह्यक दुनिया में रोशन दिमाग होकर भी अपेक्षा कृत उस जन के मुकाबले किसी कीमत का नहीं, कि जिस ने चाहे बाह्यक दुनिया में किसी युनिवर्सिटी की कोई डिगरी प्राप्त न भी की हो, परन्तु आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ किया हो। इसलिए प्रत्येक अधिकारी मनुष्य का यह परम आवश्यक कर्त्तव्य है, कि वह अपने आत्मा या जीवनी शक्ति के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान पाने के लिए आकांक्षी बने, और जिस दरबार से यह सत्य ज्ञान मिलता है, उस दरबार से उस सत्य ज्ञान के पाने के लिए शिक्षार्थी या भिखारी का रूप ग्रहण करे और ऐसे दाता के चरणों के साथ सात्विक सम्बन्ध सूत्रों से जुड़ सके।

जीवनी शक्ति में जो निहायत ही कीमती शक्ति वर्तमान है, वह निर्माणकारी शक्ति है, और इसलिए यह कहना उचित होगा, कि मनुष्य का मुख्य और मूल कर्त्तव्य यह है, कि इस निर्माणकारी शक्ति का सत्य ज्ञान लाभ करे, और उस के विकसित करने के कार्य में लग जावे। यदि वह इस मूल या मुख्य कर्त्तव्य से उदासीन रहे, और धन, धरती, नाम यश, बाहर की पदवी, बाहर की किसी शक्ति और नीच बिरादरियों की प्रशंसा के पाने और लेने के साधनों में लग जावे, और ऐस साधनों में लग जाने से अपने भीतर नीच अनुरागों और नीच घृणाओं को उत्पन्न और उन्नत करे ले, तो वह अपने आप को जितना मूर्ख, जितना अन्धा और जितना अभागा प्रमाणित करेगा, उतना और कोई नहीं। इतना तो सोचना चाहिए, कि जब मनुष्य अपने आस्तित्व को स्थिर रखकर ही बाह्क जगत् के सुखों को भोग सकता है, तो उसका यह सौदा कैसा पागलपन का सौदा! वह अपने अस्तित्व के भले से तो उदासीन रहे, और रात दिन अपने अस्तित्व को नष्ट करने में तो लगा रहे, परन्तु अपने सुखों और स्वादों के सामानों को न छोड़े,

कि जिन के भोगने से उसकी ऐसी दुर्दशा होती है और हो रही है।

जीवनी शक्ति के भीतर जो निर्माणकारी शक्ति है, उसका क्या स्वभाव है? इस विचित्र शक्ति का स्वभाव यह है, कि वह हमारा सारा अस्तित्व बनाती और उसे स्थिर रखती है। यदि हमारी अपनी ही चिन्ताओं और क्रियाओं से यह निर्माणकारी शक्ति शिथिल हो जावे, यह रोगी हो जावे, तो हम एक पागल या मदहोश जन की न्याई अपने ही घर अर्थात् अपने ही अस्तित्व को बरबाद करने में लग जाते हैं। मुझे एक पागल और मदहोश जन का पता है, कि उसके संरक्षक जनों ने उसे ज़जीरों के साथ बान्ध कर रक्खा था। मैंने यह पूछा कि उस के हाथों और पावों को क्यों बांधा गया है? मुझे बताया गया, कि वह बीमार इतना मदहोश और पागल है, कि वह अपने ही हाथों को अपने ही दांतों से काटकर घायल कर लेता था और अपने निकट से निकट के सम्बन्धियों को न केवल हाथों और पावों से मारता था, किन्तु उनको काटने के लिए भी दौड़ता था। यह पागल और मदहोश जन न अपने अस्तित्व का भला कर सकता था और न औरों के अस्तित्व का। इस के विपरीत वह अपने अस्तित्व का नाश करता था और औरों की तबाही में लग जाता था। इस मदहोश और पागल जन की सारी शक्तियां उस के अपने अस्तित्व और दूसरे अस्तित्वों को बिगाड़ने का काम करती थी। यह जन सौभाग्य वशत: उस मदहोशी से निकल आया, उसका पागलपन जाता रहा, वह होश की अवस्था में आने के साथ ही जो क्रियाऐं करने लगा, वह चूंकि होश की क्रियाऐं थी, इसलिए वह अपने अस्तित्व के लिए और अपने सम्बन्धियों के लिए सहायक वा सेवाकारी प्रमाणित होने लगा। अपनी नौकरी में लगकर पैसे कमाने लगा और जब तक जीता रहा अपने परिवार के पालन पोषण का काम करता रहा। बाह्यक जगत् में मदहोश और होशमन्द होना एक जैसी अवस्थायें नहीं हैं। बाह्यक जगत् में मदहोश जन बिगाड़ने का काम करता है और होश वाला बनाने का।

मनुष्यके आन्तरिक या सार अस्तित्व के भीतर भी यही नियम काम कर रहा है। जब निर्माणकारी शक्ति के सम्बन्ध में अन्धकार छाया रहता है और मनुष्य अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से पागल बन जाता है, तब वही जीवनी शक्ति या आत्मा मदहोश और पागल बन कर न केवल अपने अस्तित्व के बिगाड़ने का काम करता है, किन्तु अपने कुल सम्बन्धियों के सम्बन्ध में भी बिगाड़ने का काम करता रहता है। इस निर्माणकारी शक्ति के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान से अन्धा होकर एक-एक मिथ्या मत का बानी या प्रचारक ऐसी गतियां करता है, जो निर्माणकारी शक्ति को लक्ष्य करने का काम करती हैं। एक-एक धर्म मत के बानी वा प्रचारकों ने खुद निर्दोष पशुओं की कुर्बानिया दी हैं और उन को अपनी खुराक बनाने के लिए वध किया है और ऐसी ही शिक्षा अपने अनुयाइयों या अपने मज़हब के लोगों के लिए बड़े उत्साह से दी है। इस क्रिया और इस शिक्षा के कारण प्रति वर्ष करोड़ों निर्दोष पशु वध किए जाते हैं उनकी यह क्रिया बिगाड़ने की क्रिया है और निहायत उपकारी जगत् के सम्बन्ध में कृतघ्न बनने का काम है। निर्दोष पशुओं के सम्बन्ध में इस क्रिया और शिक्षा से भयानक अत्याचार का प्रचार हुआ है, और ऐसी शिक्षा पर विश्वास करने और ऐसी शिक्षा से परिचालित होकर कर्म करने से मनुष्य अत्याचारी बना है। इस प्रकार के भयंकर भावों को उत्पन्न करके ऐसे स्त्री पुरुषों के आत्मा दिनों दिन पतित और विकृत हुए और हो रहे हैं।

अब मनुष्य अपनी जीवनी शक्ति के भीतर ऐसे भावों को उत्पन्न करके जिस भयानक फल को प्राप्त करता है, वह यह है कि वह अपनी निर्माणकारी शक्ति के बल को खोता जाता है। कैसा मूर्खता और पागलपन का सौदा!! नेचर ने तो अपने लाखों वर्षों के संग्राम के बाद मनुष्य के अस्तित्व को उत्पन्न किया और यह मूर्ख, अन्धा और पागल अस्तित्व अपनी ही चिन्ताओं और क्रियाओं से अपनी निर्माणकारी शक्ति के बेबहा खजाने को लुटा-लुटा कर अपने ही कीमती अस्तित्व के लिए शत्रु प्रमाणित होता है और इस महा भयानक गति में उसके अपने ही बनाए हुए धर्म मत सहायक बनते हैं। कोई एक जन भी यदि आत्म घात कर लेता है, तो लाखों बोधी जनों में बड़ी सनसनी फैल जाती है। परन्तु आत्मिक जगत् में करोड़ों मनुष्य अपने नाना नीच अनुरागों और नीच घृणाओं और अपने मज़हबी विश्वासों से परिचालित होकर और अपनी ही मूल्यवान् निर्माणकारी शक्ति के बल को लुटाकर अपना आत्मघात कर रहे हैं। फिर भी जैसे लाखों और करोड़ों पशु किसी महामारी को अपने जत्थे में फैला हुआ देखकर और अपने जैसे सैंकड़ों, हजारों और लाखों पशुओं को मरता हुआ देख कर भी बेसुध रहते हैं, उसी प्रकार महा नीच अनुरागों और नीच घृणाओं की भयानक बिमारी को फैला हुआ देखकर भी लाखों और करोड़ों जनों के कानों पर जूँ नहीं रेंगती।

जिस प्रकार पशु जगत् को उस की बेसुधी नेचर के उन नियमों के कार्यों से नहीं बचाती, जो उसके अस्तित्वों में रात दिन बिगाड़ने का कार्य कर रहे हैं, उसी प्रकार आत्मिक जगत् से बेसुध मनुष्यों को उन की बेसुधी या अन्धता आत्मिक मृत्यु से नहीं बचाती और नहीं बचा सकती, यदि वह अपनी बेसुधी और अबोधता के कारण आत्मिक जीवन के नियमों को भंग करें और आत्मिक मृत्यु के नियमों को पूरा करें।

मनुष्य का यह सर्वोच्च अधिकार है, कि वह अपनी आत्मिक अन्धता और बेसुधी की अवस्था से (योग्यता रखने पर) छुटकारा पा सकता है। इस बेसुधी से छुटकारा पाने के लिए भी नेचर का अपना ही नियम है, जिस नियम के आगे प्रत्येक मनुष्य को सिर झुकाना ही पड़ेगा। इस आत्मिक बेसुधी या अबोधता की अवस्था से निकलने के लिए योग्यता होने पर मनुष्य का यह परम आवश्यक कर्त्तव्य है, कि वह देव ज्योति लाभ करे।

देव ज्योति वह ज्योति है, जो मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में उसके रूप और जीवन का सत्य ज्ञान देती है। देव ज्योति वह ज्योति है, जो आत्मिक पतन की अवस्था का ज्ञान वा बोध देती हैं, और उस के खौफनाक रूप को दिखा कर उस से निकलने के लिए धक्का लगाती है। देव ज्योति वह ज्योति है, जो अधिकारी आत्माओं को उच्च बोधों से विहीन अवस्था भयानक रूप में दिखाती है और उच्च भावों का मनोहर रूप दिखाकर उनके पाने के लिए धक्का लगाती है। देव ज्योति वह ज्योति है, कि जो अधिकारी मनुष्यों को उनका नेचर गत परम लक्ष्य दिखाती है, और उस लक्ष्य के सामने नीच लक्ष्यों की महाभयानक और तुच्छ छवि दिखाती है। यह देवज्योति एक अति विचित्र ज्योति है, कि जो सात्विक ज्योति से अनन्त गुणा उच्च कोटि की ज्योति है। सात्विक ज्योति मनुष्य को आत्म ज्ञान नहीं दे सकती। देव ज्योति मानसिक ज्योति से तो और भी अधिक ऊंची है, क्योंकि वह तो सात्विक दुनिया भी नहीं दिखा सकती। मानसिक ज्योति केवल मनुष्य के शरीर और बाह्यक दुनिया का ज्ञान दे सकती है। इसलिए आत्मा के

अन्धकार को मिटाकर आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान देने के लिए देव ज्योति ही काम दे सकती है।

यह देव ज्योति, यह अनोखी ज्योति, यह अति विचित्र ज्योति अधिकारी आत्माओं में प्रवेश करके यह तत्व साफ और स्पष्ट रूप में दिखाती है, कि जो जीवनी शक्ति आत्मा कहलाती है, उस जीवनी शक्ति में निर्माणकारी शक्ति एक बहु मूल्य शक्ति है, जिस के उन्नत और बलवान होने में ही प्रत्येक मनुष्यात्मा का परम कल्याण है। यह देव ज्योति यह भी बताती है, कि निर्माणकारी शक्ति के बल को नष्ट या क्षय करने वाले मनुष्य के अपने ही नीच भाव हैं, और इस निर्माणकारी शक्ति के बल को बढ़ाने और लगातार विकसित करने वाले भी उसके अपने भीतर के ही कई प्रकार के सात्विक उच्च भाव हो सकते हैं। मनुष्यात्मा के जो भाव उसकी निर्माणकारी शक्ति के लिए मृत्यु दायक प्रमाणित होते हैं, उन को नीच सुख अनुराग कहते हैं। इन नीच सुख अनुरागों से परिचालित होकर उनका दास नाना अस्तित्वों के सम्बन्ध में अपहरणकारी, अत्याचारी और उत्पीड़नकारी प्रमाणित होता है। अर्थात् नाना जगतों के नाना अस्तित्वों की तबाही में लग जाता है। तबाही का काम निर्माण या बनाने का काम नहीं है। अब यदि कोई भी स्त्री पुरुष इस सत्य से बेसुध होकर ऐसी भूतनी शक्तियों को अपने भीतर उत्पन्न करे, और उनकी गतियों से नाना अस्तित्वों को बिगाड़ने या बरबाद करने का काम करे,तो वह अपनी ऐसी क्रियाओं के फलों से बच नहीं सकता। मनुष्य की जीवनी शक्ति में जो निर्माणकारी शक्ति है, वह मानो बार-बार पुकार कर कहती है, कि ऐ मूर्ख मनुष्य! तुम बिगाड़ने का काम करके क्या यह आशा करते हो, कि मैं बलवान होती जाऊंगी। मेरा कार्य तो बनाने का है। तुम्हारी बिगाड़ने की क्रियाओं से मेरा बनाने का बल क्षय होता जाएगा। और मेरे बल के क्षय होने के साथ-साथ तुम्हारी भी खैर नहीं। मुझे स्थिर रखने और बलवान बनाने के लिए तुम उन सब शक्तियों से मोक्ष लाभ करो जिन का नाम नीच सुख अनुराग है, और तुम ऐसे उच्च भाव अपने भीतर उत्पन्न और उन्नत करो, कि जिन से परिचालित होने पर तुम हानिकारक कुछ भी न रहो और सेवाकारी अधिक से अधिक बन सको। ऐसे उच्च भावों की अवस्था को प्राप्त होकर जहां एक और तुम नाना जगतों के नाना अस्तित्वों अर्थात् उनके रूपों और गुणों को बेहतर बनाओगे, वहां दूसरी ओर मेरे बनाने के बल को भी उन्नत करते जाओगे। ज्यों-ज्यों मेरा यह बल बढ़ता जाएगा, त्यों-त्यों मैं तुम्हारे अस्तित्व को भी सुरक्षित रखने और उसे चिरकाल तक जीवित रखने में कृतकार्य हो जाऊंगी।

सत्य नेचर का यह सत्य नियम कि जो अस्तित्व और अस्तित्वों को बिगाड़ेंगे, वह स्वयं भी बिगड़ जायेंगे, और जो अस्तित्व औरों को बनायेंगे, वह खुद भी बन जायेंगे, एक ऐसा अटल नियम है, कि जिस को देव ज्योति से ज्योतिर्मान जन ही अच्छी तरह से देख और उप्लब्ध कर सकते हैं। और इस उपलब्धि से आगे वह इस कीमती उपलब्धि को भी पा सकते हैं, कि जब सारे जगत् के लिए नेचर का यह नियम है और जो प्रति दिन की घटनाओं से प्रमाणित होता है, तब मेरा अस्तित्व जो कि नेचर का ही एक अंश है, इस नियम के बाहर नहीं, और इसलिए यदि मैं नीच सुख अनुरागों के दासत्व से अपने इर्द-गिर्द के अस्तित्वों के बिगाड़ने का काम करूंगा, तो मेरे लिए यह आशा करना, कि मैं अपनी निर्माणकारी शक्ति को बलवान करूंगा, एक भयानक मूर्खता और अन्धता है। मैं अपनी बहुमूल्य निर्माणकारी शक्ति को निर्माण

के कार्य से ही बलवान करूंगा और मेरे लिए यह निर्माण का कार्य तब ही सम्भव है, कि जब मैं एक ओर नीच रागों के दासत्व से निकलूं और दूसरी ओर उच्च भावों को जाग्रत और उन्नत करूं। नेचर के नियमानुसार मेरे लिए सत्य मोक्ष पाना और अपने आत्मा का उच्च विकास करना मेरा असल लक्ष्य है, इस लक्ष्य से अन्धा और विमुख होकर और नीच सुखों को लक्ष्य बना कर मेरे अस्तित्व की खैर नहीं। जिन को देव ज्योति में ऐसी उपलब्धि हो जाएगी, वह यह दृश्य देखकर, कि मूर्ख मनुष्य अपने आत्मिक उच्च लक्ष्य से अन्धे होकर नीच सुखों के सामानों और नीच सम्बन्धियों के पीछे भागे फिरते हैं, और मोह बन्धनों में फंसकर अपना नाश करते हैं, बहुत दुख से भर जायेंगे, और वह अपने भीतर इस प्रकार के धक्के लगते हुए अनुभव करेंगे, कि वह दुनिया के सुखों और सम्बन्धियों के दासत्व से निकल कर अपनी आत्मिक भलाई के कार्य में ही लग जावें, और अपने सम्बन्धियों और अज़ीजों को भी ऐसे ही कार्य में लगा हुआ देखकर हर्ष प्राप्त करें।

ऐसी विचित्र देव ज्योति से ज्योतिर्मान होकर अधिकारी मनुष्य यह उपलब्धि भी पा सकते हैं और पाते हैं, कि जब सत्य मोक्ष पाना और उच्च भावों में विकास लाभ करना ही मनुष्यात्मा का परम लक्ष्य है, तब जिस उपास्य देव वा परम गुरू के श्री चरणों से जुड़कर उनका यह लक्ष्य सिद्ध हो सकता है, वह उनके अति मुबारिक और पूजनीय रूप के साथ अपना सम्बन्ध गहरा करने के लिए ऐसी सात्विक शक्तियों के उत्पन्न करने में लग जावें, कि जिन के पैदा होने से वह उस दाता के साथ दिनों दिन अपना सम्बन्ध घनिष्ट कर सकें। ऐसे सौभाग्यवान जन तो दो बातों को ही मुख्य समझेंगे और इसके लिए ही जीयेंगे, अर्थात् अपना आत्मिक परम कल्याण और उस की प्राप्ति के लिए भगवान देवात्मा के साथ परमावश्यक सम्बन्ध। ऐसे ही बोधी जन निम्नलिखित संगीत के महत्त्व को अनुभव कर सकेंगे और पूरे उत्साह के साथ उसका गान करेंगे :-

परम आवश्यक जीवन दायक,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध;
सब अंगों में हित सम्पादक,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध।
मेरे भीतर मेरा जीवन,
मुख्य वस्तु है जो निश्चय;
उसक रक्षक और विकासक,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध।
मेरे नाना सम्बन्धों में,
नीच गति दायक जो है;
उस से पूर्ण मुक्ति दाता,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध।
मेरे सारे सम्बन्धों में,
उच्च गति प्रद भावों का;
जाग्रितकारी और विकासक,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध।
ऐसे भगवन् को मैं दिल से,
प्यार करूं सब से बढ़कर;
सब सम्बन्धों से बढ़ जावें,
मेरे भगवन् का सम्बन्ध।

****
****

भजन

धन्यभाग, सुलखनी घड़ी सी ओह, जदों जग विच देव भगवान आए।
लखां साल विकास दी उन्नति चों, देव शक्तियां धार महान आए।
हर सचाई भलाई दे अनुरागी, मिथ्या झूठ दी धुन्ध मिटाऊण आए।
अचरज तेज युक्ति अद्वितीय रूहानियत दा, देके मर दीयां रूहां बचाऊण आए।
सूरज आत्मिक चमकिया जग अन्दर, भगवान धर्म विज्ञान दे नाप दसे।
जिसदे नाल इन्सान नहीं उच्च बनदा, साधन धर्म दे अजिहे पाप दसे।

उत्तों रब दा नाम उचार हुंदा, विचो विच ही पाप ओह करी जांदे।
थोड़ा जाप करके, थोड़े चिन्ह रखके, लोकी कहदे हां असीं तरी जांदे।
कई कहण गुनाह मुआफ करदा, चरणीं जिन्हां दे शीश हां धरी जांदे।
जदों ज्ञान ही नहीं सी आत्मा दा, करदे की जो ऐवें न मरी जांदे।
देवात्मा प्रगट, होए जहान अन्दर, देव ज्योति तों रूह दा बोध दिता।
ऐसा तेज अदुती सी रोशनी दा, जिसने आत्म हनेर तों मोड़ दित्ता।

चोर डाकू नशई ते मांसाहारी, बिगड़े आदमी सही इन्सान बन गए।
जेहड़े जमदीयां धीयां नूं मारदे सी, रक्षक ओहना दे विच जहान बन गए।
रिश्वत, चोरीयां वढीआं खान वाले, रिश्वत मोड़ने लई बलवान बन गए।
बदीयां नाल जो सन मिठान बन गए, सेवाकारी वजूद महान बन गए।
देवात्मा दी देव रोशनी ने, पाप पुण्य दी परख दी अक्ख दिती।
जेहड़े धर्म दी नी सी रेत उत्ते, दुनियां धर्म दी बदल के रख दित्ती।

है कोई जुगां दे किस इतिहास अन्दर, चोर-चोरी बिन पुलिस दी मार दस्से।
है कोई माता जां पिता दा कतलकारी, रो-रो सभा दे विच ललकार दसे।
है कोई नौकर दे हथ फड़ा डंडा, आखे मार खुद नूं गुनाहगार दसे।
सिर्फ रोशनी देव भगवान दी है, जिसदी लीला अजब चमत्कार दसे।
राक्षस मारे नहीं, राक्षस बदल दिते, करामात दित्ती देवतकार अन्दर।
जेकर किसे नूं नहीं यकीन आऊंदा, आ के देख लए देव समाज अन्दर।

भगवान दसिआ जेहड़ा गुनाह हुंदा, ओहो कदे मुआफ नहीं हो सकदा।
जिवें शीशा है टुटदा सट्ट मारी, शीशा जोड़े वी साफ नहीं हो सकता।
करे पाप ते जो रोक छड्डे, ऐसा कोई गिलाफ नहीं हो सकदा।
छुरी चले गुनाह दी आत्मा ते, कौन कहिंदा शिगाफ नहीं हो सकदा।
हुंदी मौत ते जिन्दगी आत्मा दी, ऐह कदे निरलेप नहीं हो सकदी।
संध्या जाप सिमरन जां नमाज रोजे, कोई विधि वी पाप नहीं धो सकदी।

परोपकार भलाई मनुखता दी, उच्ची सेवा दे नाल उद्धार हुंदा।
बंदा कुदरती सुखां दा है आशिक, सुखां लई एहतों पापचार हुंदा।
नहीं सचाई भलाई दा प्यार हुंदा, पाप करन लई तां ही लाचार हुंदा।
पर जे देव भगवान दी शरण आये, बेड़ा शर्तिया इस दा पार हुंदा।
देव रोशनी दा जिसनूं दान मिल जे, जिनी मात्रा नाल ओहो जुड़ी जावे।
ऐह प्रतरव प्रमाण है धर्म उत्ते, ऊनी आत्मा पापा चों मुड़ी जावे।

धर्म खोजिया सांईस दी लौ अन्दर, हितकारी है हित संदेश दिंदा।
लग पापा दे सिन्ध तो पार जाईए, सिर्फ मिथ्या नहीं संगो जान मिलदी।
ऐसी देव समाज दे बारम्बार जाईए, जिसे सत्य ते हित दी कान मिल दी।
जन्म दिवस अज देव भगवान उत्ते, जशन चाहीदा करना माहताबीयां दा।
कोशिश दान पाके देवात्मा, करीऐ हल रूहानी खराबीयां दा।

(डा. योगराज कौशिक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts